एम.एच. कॉलेज [illegible]
हिन्दी विभाग
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा भाग-1
विषय:- चन्द्रगुप्त नाटक
प्रकरण - [illegible]
समय:- 11 बजे से 12 बजे तक, 07.4.20[illegible]
शिक्षक - डा. [illegible]
पाठ - रस निरूपण

प्रिय छात्र-छात्राओं!

चन्द्रगुप्त नाटककार जयशंकर प्रसाद जी का ऐतिहासिक नाटक है। [illegible] का नाटक होने के नाते इसके कथानक में भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की [illegible] से जुड़ाव यही है जो स्वाभाविक है। ऐतिहासिक कथानक होते चन्द्रगुप्त के [illegible] आधुनिक [illegible] की अभिव्यक्ति तत्कालीन भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन का प्रस्तुत नाटक के रूप में देखा जाता है।

इस नाटक में प्रमुख तीन घटनाएँ हैं — सिकन्दर का अभियान, नंद वंश का उन्मूलन, और सिल्यूकस का आक्रमण। ये तीनों घटनाएँ युद्ध से ही सम्बन्ध रखती हैं और तीनों में आलम्बन एक ही है — चन्द्रगुप्त। आलम्बन तीन अवसर पर आते हैं, अतएव तीनों का विचार पृथक्-पृथक् भी हो सकता है और एक साथ भी। अंतिम को अंगी स्वीकार कर और प्रथम दो को साधन अथवा अंग मानकर। जिस क्रम से भी हो परिणाम में नाटक वीर-रस का ही ठहरेगा। इसमें सम्पूर्ण अवसरों के संयोग से वीर-रस की ही निष्पत्ति हुई है। नाटक में अंतिम स्थल पर जो प्रसाद की अभिव्यक्ति होती है वही पूर्ण रस-निष्पत्ति का कारण बनकर चमत्कार उत्पन्न करने और लोकोत्तर काव्यानन्द देने में सहायक बनती है।

इस प्रभाव की स्थिति में स्वतः वीर-रस ही प्रधान ठहरता है। नाटक में उपर्युक्त तीनों प्रमुख घटनाओं से जुड़े समस्त कार्य-व्यापार युद्ध से ही सम्बद्ध हैं और सभी का लक्ष्य रस-निष्पत्ति है। उत्साह के तीन आलम्बन हैं, अतएव तीनों के पृथक्-पृथक् विस्तार होने से स्पष्टता और अधिक निखरेगी।

सिकन्दर को आलम्बन मानकर यदि उद्दीपन का विस्तार किया जाय तो सभी उपादान उस पक्ष के ही दिखाई पड़ेंगे। पर्वतेश्वर-पराजय से शत्रु पक्ष का प्रताप और उत्कर्ष देखकर चन्द्रगुप्त का उत्साह और जोर पकड़ता है। सहायता का वचन देकर युद्ध-क्षेत्र में पहुँचकर पर्वतेश्वर का शत्रु-पक्ष में मिल जाना (इसे नाटक में यों देखा जा सकता है — 'अलका — पर्वतेश्वर ने प्रतिज्ञा भंग की है, वह सैनिकों के साथ सिकन्दर की सहायता के लिए आया है!'), सिंहरण के पास सिकन्दर का संदेश भेजना — (मालव नेता मुझसे आकर भेंट करें और मेरी जल-यात्रा की सुविधा का प्रबन्ध करें) उद्दीपन विभाव के अन्तर्गत आते हैं। और आक्रम के उत्साह वर्द्धन में योगदान देते हैं। सिंहरण ने जो सिकन्दर को दर्पपूर्ण शब्दावलि में उत्तर दिया — 'हाँ, भेंट करने के लिए मालव सदैव प्रस्तुत रहते हैं — चाहे संधि-परिषद में या रणभूमि में' और चन्द्रगुप्त और सिंहरण द्वारा किया

युद्ध प्रयोग, युद्ध उद्योग और युद्ध निश्चय अनुभाव के भीतर आते हैं। द्वितीय अंक के नौवें और दसवें दृश्यों के अंत-स्थल में अनुभाव का अच्छा वर्णन मिलता है। साथ में गर्व, धृति, स्मृति तथा औत्सुक्य संचारी रूप में दिखाई पड़ते हैं —

'यवन — दुर्ग द्वार टूटता है और अभी हमारे वीर सैनिक इस दुर्ग को मटियामेट करते हैं। मालवों के लिए औत्सुक्य है।

'मालव सैनिक — सेनापति, रक्त का बदला! इस नृशंस ने निरीह जनता का अकारण वध किया है। स्पष्ट स्मृति का रूप है।

सिंहरण — ले जाओ सिकन्दर को उठा ले जाओ जब तक और मालवों को यह न विदित हो जाय कि यह वही सिकन्दर है। यह भारत के ऊपर एक ऋण था, पर्वतेश्वर के प्रति उदारता दिखाने का यह प्रत्युत्तर है।

शेष अगली कक्षा में

रमेश [illegible]
9.7.20